SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 4

औद्योगीकरण का युग

भाग - 8

Pritesh Joshi

2. प्रत्येक वक्तव्य के आगे 'सही' या 'गलत' लिखें।

(क) 19वीं सदी के आखिर में यूरोप की कुल श्रम शक्ति का 80 प्रतिशत तकनीकी रूप से विकसित औद्योगिक क्षेत्र में काम कर रहा था।

उत्तर : 'गलत'

कारण :- 19वीं सदी के आखिर में यूरोप में तकनीक रूप से विकसित औद्योगिक क्षेत्र में काम करने वाले मजदूरों की संख्या 20 प्रतिशत से ज्यादा नहीं थी।

क्योंकि कपड़ा उद्योग का एक बड़ा हिस्सा कारखानों में नहीं बल्कि घरेलू इकाइयों में काम करता था।

(ख) 18वीं सदी तक महीन कपड़े के अन्तर्राष्ट्रीय बाजार पर भारत का कब्जा था।

उत्तर : 'सही'

- बहुत सारे देशों में मोटा कपास पैदा होता था लेकिन भारत में पैदा होने वाला कपास महीन किस्म का था।
- इस महीन कपास की पूरे विश्व में माँग थी।

स्थल मार्ग से व्यापार :-

- आर्मीनियन और फारसी सौदागर भारत में पंजाब से अफगानिस्तान, पूर्वी फारस और मध्य ऐशिया के रास्ते यहाँ से चीजें लेकर जाते थे।

- ये सौदागर महीन कपड़ों के थान ऊँटों की पीठ पर लादकर पश्चिमोत्तर सीमा से पहाड़ी दर्रों व रेगिस्तानों को पार कर ले जाते थे।

समुद्री व्यापार :-

- गुजरात के तट पर स्थित सूरत बंदरगाह के जरिए भारत खाड़ी और लाल सागर के बंदरगाहों से जुड़ा हुआ था।
- दूसरी तरफ पूर्व में कोरोमंडल तट पर मछलीपट्टनम और बंगाल में हुगली के माध्यम से भी दक्षिण पूर्वी एशियाई बंदरगाहों के साथ खूब व्यापार चलता था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

निर्यात ↑

इस प्रकार से स्थल व जलमार्ग द्वारा 18वीं सदी तक महीन कपड़े के अंतर्राष्ट्रीय बाजार पर भारत का कब्जा था।

(ग) अमेरिकी गृह युद्ध के फलस्वरूप भारत के कपास निर्यात में कमी आई।

उत्तर : 'गलत'

कारण :- जब अमेरिकी गृह युद्ध शुरू हुआ तो अमेरिका से ब्रिटेन में कपास आना बंद हो गया। ब्रिटेन को कपास की जरूरत पड़ी तो वह भारत से कपास मँगाने लगा।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इस प्रकार से भारत के कपास निर्यात में वृद्धि हुई।
- भारतीय कपास की कीमतें रातों-रात आसमान छूने लग गईं थीं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

(घ) 'फ्लाई-शटल' के आने से हथकरघा कामगारों की उत्पादकता में सुधार हुआ।

उत्तर : 'सही'

कारण :- जब लागत कम हो और उत्पादन बढ़ रहा हो तो हाथ से काम करने वाले भी नई तकनीक अपनाने लगते हैं।

- इसलिए 20वीं सदी के दूसरे दशक तक बुनकर फ्लाई शटल वाले करघों का इस्तेमाल करने लगे थे।
- यह रस्सियों और पुलियों के सहारे चलने वाली मशीन थी। इसका बुनाई के लिए इस्तेमाल किया जाता था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यह क्षैतिज धागों (ताना) को लंबवत धागों (बाना) में पिरो देती है।
- इससे चौड़े अरज़ का कपड़ा बनाने में मदद मिली।
- इससे बड़े करघे चलाये जा सकते थे।
- इससे कामगारों का उत्पादन बढ़ गया तथा श्रम की माँग में कमी आई।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कारखाने मशीन प्रक्रिया पर

3. पूर्व-औद्योगकीकरण का मतलब बताऐं।

उत्तर : पूर्व अथवा आदि-औद्योगीकरण :-

- इंग्लैंड और यूरोप में फैक्ट्रियों की स्थापना से भी पहले अंतर्राष्ट्रीय बाजार के लिए बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन होने लगा था।
- यह उत्पादन फैक्ट्रियों से नहीं होता था, बल्कि घरेलू इकाइयों से होता था।
- इतिहासकार औद्योगीकरण के इस चरण को आदि-औद्योगीकरण कहते हैं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्रक्रिया :- 17वीं और 18वीं सदी में यूरोपीय शहरों के सौदागर गाँवों की तरफ रूख करने लगे थे।

- गाँवों के गरीब काश्तकार और दस्तकार सौदागरों के लिए काम करते थे।
- यह वह समय था जब यूरोप में खुले खेत खत्म होते जा रहे थे।
- छोटे और गरीब किसान अपनी रोजी रोटी के लिए साझा जमीनों से जलाने की लकड़ी, सब्जियाँ, भूसा और चारा आदि बीनकर काम चला रहे थे।
- बहुतों के पास खेत तो थे पर उनसे घर के सारे लोगों का पेट नहीं भर पा रहा था

- इस स्थिति में जब सौदागर वहाँ आए और उन्होंने माल पैदा करने के लिए पेशगी रकम दी तो किसान फौरन तैयार हो गए।
- सौदागरों के लिए काम करते हुए वे गाँव में रहते हुए अपने छोटे-छोटे खेतों को भी सँभाल सकते थे।
- इस आमदनी ने उनको बड़ा सहारा दिया।
- अब उन्हें पूरे परिवार के श्रम संसाधनों के इस्तेमाल का मौका भी मिल गया।
- इस व्यवस्था से शहरों और गाँवों के बीच एक घनिष्ठ संबंध विकसित हुए।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- सौदागर रहते तो शहरों में थे लेकिन उनके लिए काम ज्यादातर देहात में होता था।

उदाहरण के तौर पर :-

- इंग्लैंड के कपड़ा व्यवसायी स्टेप्लर्स से ऊन खरीदते थे।
- उसे फिर सूत कातने वालों के पास पहुँचा देते थे।
- इस धागे से बुनकर कपड़ा बनाते थे।
- फिर फुलर्ज इस कपड़े पर सलवटें मिटाने का काम करते थे।
- रंगसाज इस कपड़े को रंगते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- लंदन में कपड़ों की फिनिशिंग होती थी।
- इसके बाद निर्यातक-व्यापारी कपड़े को अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में बेच देते थे।
- अतः इस आदि-औद्योगीकरण में व्यवसायिक आदान-प्रदान होता रहता था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

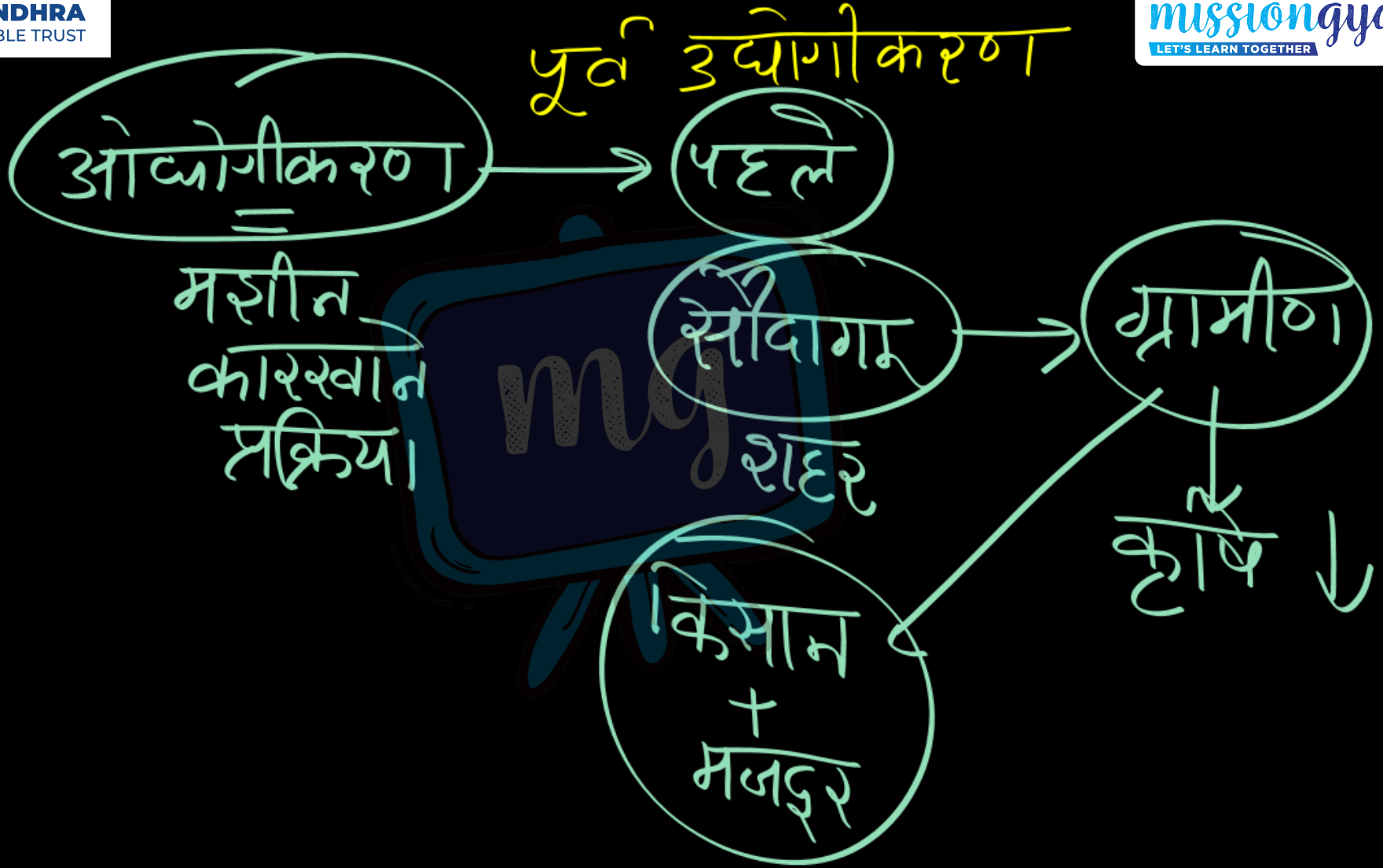

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

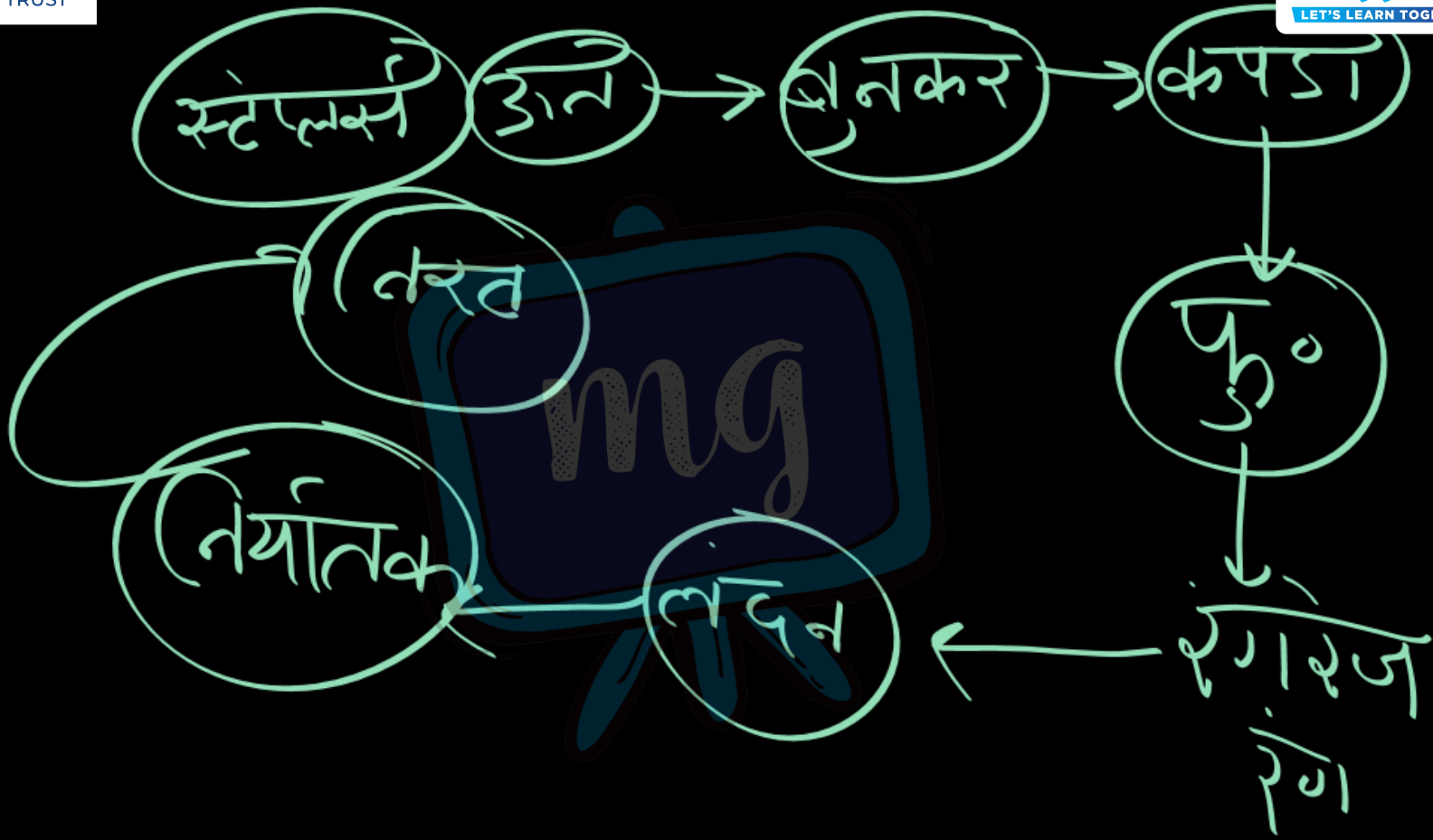

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

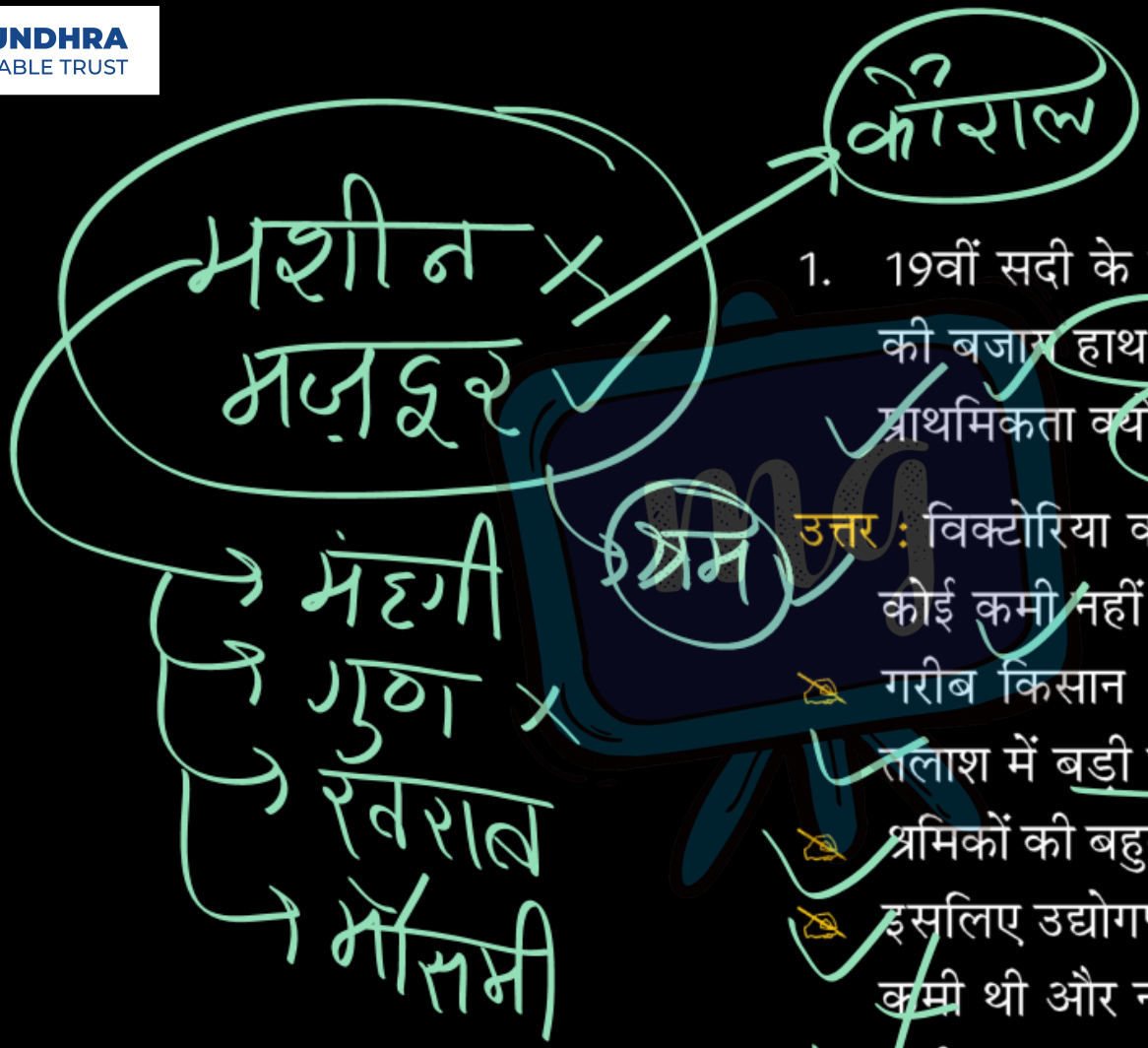

1. 19वीं सदी के यूरोप में कुछ उद्योगपति मशीनों की बजाए हाथ से काम करने वाले श्रमिकों को प्राथमिकता क्यों देते थे?

उत्तर : विक्टोरिया कालीन ब्रिटेन में मानव-श्रम की कोई कमी नहीं थी।

- गरीब किसान और बेकार लोग कामकाज की तलाश में बड़ी संख्या में शहरों को जाते थे।
- श्रमिकों की बहुतायत के कारण वेतन गिर गए थे।
- इसलिए उद्योगपतियों को न तो श्रमिकों की कोई कमी थी और न ही उनके वेतन के मद में कोई भारी लागत लगती थी।

- उद्योगपतियों को ऐसी मशीनों में भी कोई दिलचस्पी नहीं थी जिसके कारण उन्हें मजदूरों से छुटकारा मिल जाए और उन मशीनों के कारण बहुत ज्यादा खर्चा आने वाला हो।

मौसमी आधार पर मजदूरों की माँग :-

- बहुत सारे उद्योगों में मजदूरों की माँग मौसमी आधार पर घटती बढ़ती रहती थी।
- गैसघरों और शराबखानों में जाड़ों के दौरान खासा काम रहता था। इन दौरान उन्हें ज्यादा मजदूरों की जरूरत होती थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- क्रिसमस के समय बुक-बाइंडरों और प्रिंटरों को भी दिसम्बर से पहले अतिरिक्त मजदूरों की दरकार रहती थी।
- बंदरगाहों पर जहाजों की मरम्मत और साफ-सफाई व सजावट का काम भी जाड़ों में ही किया जाता था।
- जिन उद्योगों में मौसम के साथ उत्पादन घटता-बढ़ता रहता था वहाँ उद्योगपति मशीनों की बजाय मजदूरों को ही काम पर रखना पसंद करते थे।

इनसानी निपुणता :-

- बहुत सारे उत्पाद ऐसे थे जो केवल हाथ से ही तैयार किये जाते थे।
- मशीनों से तो एक जैसे तथा तय-किस्म के उत्पाद ही बड़ी संख्या में बनाये जा सकते थे।
- लेकिन बाजार में अकसर बारीक डिजाइन और खास आकारों वाली चीजों की काफी माँग रहती थी।
- **उदाहरण के लिए :-** 19वीं सदी के मध्य में ब्रिटेन में 500 तरह के हथोड़े तथा 45 तरह की कुल्हाडियाँ बनाई जा रही थीं।

- इन्हें बनाने के लिए मशीनों की नहीं बल्कि इनसानी निपुणता की जरूरत थी।
- विक्टोरिया कालीन ब्रिटेन में उच्च वर्ग के लोग जैसे कुलीन और पूँजीपति वर्ग, हाथों से बनी चीजों को ही तरजीह देते थे।
- हाथों से बनी चीजों को परिष्कार और सुरूचि का प्रतीक माना जाता था।
- उनकी फिनिशिंग भी अच्छी होती थी।
- उनको एक-एक करके बनाया जाता था और उनका डिजाइन अच्छा होता था।
- मशीनो से बनने वाले उत्पादों को तो उपनिवेशों में निर्यात कर दिया जाता था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

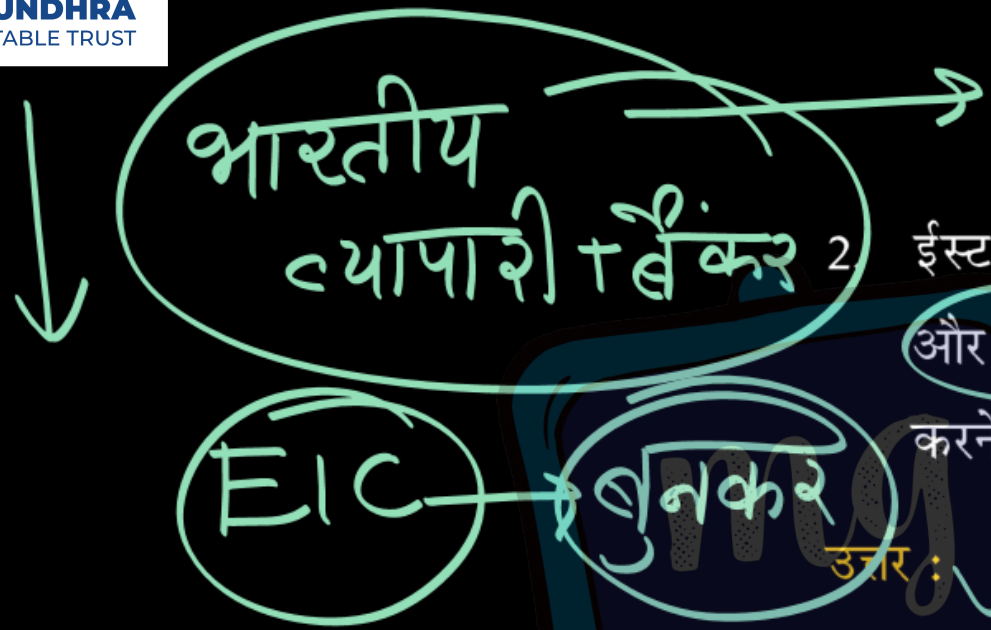

2 ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय बुनकरों से सूती और रेशमी कपड़े की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए क्या किया ?

उत्तर :

- 1760 के दशक तक ब्रिटिश कपड़ा उद्योग फैलना शुरू नहीं हुआ था तथा यूरोप में भारतीय कपड़ों की भारी माँग थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- 1760 और 1770 के दशकों में बंगाल और कर्नाटक में राजनीतिक सत्ता स्थापित करने से पहले ईस्ट इंडिया कंपनी को निर्यात के लिए लगातार कपड़े की सप्लाई नहीं मिल पाती थी।
- बुने हुए कपड़े को हासिल करने के लिए फ्रांसीसी, डच, पुर्तगालियों के साथ-साथ स्थानीय व्यापारी भी होड़ में रहते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

